इंदिरा किसान मितान

इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय

कृषि विज्ञान केन्द्र, बेमेतरा

अंक–02 | Mobile : 7067287806 , www.kvkbemetara.org , Email :kvkbemetara@gmail.com | अक्टूबर–दिसम्बर 2020 | वर्ष–01

संरक्षक
डॉ. एस.के. पाटील
माननीय कुलपति
इं.गा.कृ.वि.वि. रायपुर (छ.ग.)

मार्गदर्शक
डॉ. एस.सी. मुखर्जी
निदेशक विस्तार सेवाएं
इं.गा.कृ.वि.वि. रायपुर (छ.ग.)

प्रेरणास्त्रोत
डॉ.एस.आर.के.सिंह,
निदेशक, भा.कृ.अनु.प.
कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग
अनुसंधान संस्थान
जोन 09, जबलपुर (म.प्र.)

प्रधान संपादक
डॉ. जी.पी. आयम
वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख
कृ.वि.के. बेमेतरा

संपादक
डॉ. वेधिका साहू
विषय वस्तु विशेषज्ञ
कृ.वि.के. बेमेतरा

संपादक मंडल
श्री तोषण ठाकुर
डॉ. एकता ताम्रकार
इंजी. जितेन्द्र जोशी
डॉ. चेतना बंजारे
डॉ. प्रज्ञा पाण्डेय
डॉ. हेमन्त साहू
श्री शिव सिन्हा

श्री रविन्द्र चौबे, माननीय कृषि मंत्री छत्तीसगढ़ शासन द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र की गतिविधियों का अवलोकन

डॉ एस. के पाटिल माननीय कुलपति इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय रायपुर द्वारा राज्य पोषित पोषण बड़ी के हितग्राही किसानों को सब्जी किट वितरण

डॉ.एस.आर.के. सिंह, निदेशक, भा.कृ.अनु.प. कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान जोन 09, जबलपुर (म.प्र.) द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र का भ्रमण एवं गतिविधियों का अवलोकन

डॉ. एस.के.पाटील, माननीय कुलपति इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय रायपुर द्वारा प्रक्षेत्र भ्रमण एवं कृषि विज्ञान केन्द्र की गतिविधियों का अवलोकन

चने की उन्नत काश्त तकनीक

धान के बाद चने की खेती करने से भूमि की उपजाऊ क्षमता में विशेष रूप से बढ़ोत्तरी होती है, जिसका सकरात्मक प्रभाव खरीफ में उगाई जाने वाली धान की फसल पर भी पड़ता है। चने के पौधों की जड़ों में राइजोबियम की गठानें होने के कारण चना वायु मंडलीय नत्रजन का उपयोग करता है परिणाम स्वरूप भूमि में लाभदायी सूक्ष्म जीवाणुओं एवं नत्रजन की मात्रा में बढ़ोत्तरी होती है। इस प्रकार भूमि की उर्वरा शक्ति बनाये रखने में चने की खेती अति महत्वपूर्ण है। असिंचित अवस्था में अन्य फसलों की तुलना में चने की खेती द्वारा अधिक लाभ कमाया जा सकता है।

छत्तीसगढ़ में चने की खेती असिंचित तथा सिंचित अवस्था में की जाती है। छत्तीसगढ़ में इनकी खेती असिंचित अवस्था में डोरसा से कन्हार मिट्टी में तथा सिंचित अवस्था में मध्यम (मटासी से मटासी–डोरसा) जमीन में की जा सकती है। छत्तीसगढ़ में चने का उपयोग विभिन्न रूपों में किया जाता है जैसे हरे बूट के रूप में, दाल के रूप में, छोले के रूप में, बेसन के रूप में आदि।

बुवाई का समय

असिंचित अगेती बुवाई	: सितम्बर के अंतिम सप्ताह से अक्टुबर के तृतीय सप्ताह तक।
असिंचित, अर्द्धसिंचित एवं सिंचित बुवाई	: अक्टुबर के अंत से नवम्बर तक।
सिंचित, पछेती बुवाई	: दिसंबर के प्रथम सप्ताह तक।

बुवाई का तरीका

चने की फसल में कतार से कतार की दूरी 30 सेमी. एवं बीज से बीज की दूरी 7–10 से.मी. रखें।

हर कदम,हर डगर, किसानों का हमसफर, किसानों की सेवा में तत्पर, कृषि विज्ञान केन्द्र

पोषक तत्व प्रबंधन :- मृदा परीक्षण के आधार पर खाद एवं उर्वरक का उपयोग करे। सामान्यत : 20 कि.ग्रा. नाइट्रोजन 40-50 कि.ग्रा. स्फुर, 20 कि.ग्रा. पोटाश एवं 20 कि.ग्रा. गंधक , 5 टन गोबर खाद प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। स्फुर पोटाश एवं गंधक को आधार मात्रा में बुवाई के समय दिया जाता है। चने की अच्छी बढवार के लिए DAP का 2 प्रतिशत घोल बना कर फसल के पहली निपिंग के बाद फसल में दिया जाता हैं।

सिचाई :- चने की फसल में दो सिंचाई की आवश्यकता होती है। प्रथम शाखाएँ बनते समय व द्वितीय फलियों में दाना बनते समय करें। किसी भी दशा में सिंचाई फूल आने के समय ना करें।

चने में समन्वित रोग एवं कीट प्रबंधन

उकठा रोग :-

लक्षण :-

इस रोग का प्रभाव खेत में छोटे-छोटे टुकड़ों में दिखाई देता है। प्रारंभ में पौधें की ऊपरी पत्तियां मुरझा जाती है व धीरे-धीरे पूरा पौधा सुखकर मर जाता है। जड़ के पास तने को चीरकर देखने में परवाहक ऊतकों में कवक जाल धागेनुमा काले रंग की संरचना के रूप दिखाई देता है।

प्रबंधन :-

- फसल चक्र अपनाये।
- रोगरोधी किस्म जे.जी.-14, जे.जी.-16, इंदिरा चना-1, वैभव, जाकी-9218 आदि की बुवाई करें।
- बीजों को कार्बेन्डाजिम 50 डब्ल्यू पी. 2 ग्राम या ट्राइकोडर्मा पाउडर 10 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीजोपचार करें। 4 किलोग्राम ट्राइकोडर्मा को 40 किलोग्राम सड़ी हुयी गोबर की खाद में मिलाकर बुवाई से पहले प्रति हेक्टेयर की दर से खेत में मिलाये।

चने का स्केलेरोटीनिया तना सड़न

रोग के लक्षण सबसे पहले लम्बे धब्बे के रूप में तने पर दिखाई देते है। जिन पर कवक जाल के रूप में दिखाई देते है। उग्र अवस्था में तना फट जाता है व पौधा मुरझाकर सुख जाता है। संक्रमित भाग पर काले काले गोल कवक के स्केलेरोशिया दिखाई पड़ते है।

प्रबंधन

- बीजों को कार्बेन्डाजिम + मेन्कौजेब (साफ) 2 ग्राम या ट्राइाकोडर्मा पाउडर 10 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीजोपचार करें।
- खड़ी फसल में बुवाई के 50-60 दिन बाद रोग के लक्षण दिखाई देने पर कार्बेन्डाजिम + मेन्कौजेब 0.2 प्रतिशत के घोल का छिड़काव करें।
- रोग पौधे को उखाड़कर नष्ट कर दे।

चने में ऐस्कोकाइटा अंगमरी रोग

यह बीज व भूमि जनित रोग है। जिसका फैलाव वायवीय फफूंद स्पोर पिक्निडिओस्पोर के द्वारा होता है। रोग के लक्षण फरवरी मार्च में दिखाई देते है। ग्रसित पौधों के तने, पत्तियों व फलियों पर छोटे गोल व भूरे रंग के धब्बे दिखाई पड़ते है।

प्रबंधन

- बीजों को कार्बेन्डाजिम 50 डब्ल्यू.पी. 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीजोपचार करें।
- खड़ी फसल में रोग के लक्षण दिखाई देने पर मन्कौजेब 75 डब्ल्यू.पी. 2 ग्राम या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50 डब्ल्यू.पी.
- 3 ग्राम प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

चने में जड़ गलन

खड़ी फसल में स्वस्थ पौधों के बीच संक्रमित पौधे सुखकर मर जाते है। रोगग्रस्त पौधे को उखाड़कर देखने पर जड़ व तने के जुड़ाव वाले स्थान से फफूंद की सफेद वृद्धि दिखाई देती है।

चने के प्रमुख कीट

चने का पत्ती छेदक

- फली छेदक के नियंत्रण हेतु प्रारंभिक अवस्था में एन. पी. वी. 250 एल. ई. प्रति हेक्टेयर की दर से 15-20 दिनों की अन्तराल से तीन बार उपयोग मे लेवें।
- खड़ी फसल में 50-60 प्रतिशत फूल आने पर एन.पी.वी. 250 LE प्रति हेक्टेयर या नीम का तेल 700 मि.ली. का प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें या निथाईल पैराधियान 2 प्रतिशत चूर्ण का 20-25 किलो प्रति हेक्टेयर की दर से भुरकाव करें।

पिछले तीन माह (जुलाई – सितम्बर) की उपलब्धियां

विस्तार गतिविधियां

क्र.	विषय	संख्या	लाभवन्ति
1.	कृषक संगोष्ठी प्रशिक्षण	5	500
2.	वैज्ञानिकों का कृषक खेतों पर भ्रमण	90	350
3.	प्रदशर्नीय	1	120
4.	लोकप्रिय साहित्य	1	मास

चने का कटवर्म व दीमक

- कटवर्म व दीमक की रोकथाम के लिए क्लोरएन्ट्रीनिलीप्रोल 10 किलोग्राम प्रति एकड़ की दर से बुवाई से पूर्व मिट्टी में अच्छे से मिला दें।

प्रक्षेत्र परिक्षण/अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

क्र.	विषय	संख्या	लाभवन्ति
1.	किसानों के खेत पर पौष्टिक किचन गार्डन के प्रभाव का आंकलन	10	40
2.	शकरकंद – इंदिरा मधुर किस्म का मूल्यांकन	4	12
3.	पंक्ति से पंक्ति की अधिक दूरी का चने के उत्पादन पर प्रभाव	1	4
4.	मिश्रित मछली पालन में मछली के बढ़वार एवं उत्तरजीविता पर प्रोबायोटिक के प्रभाव का आंकलन	5	5
5.	मछली तालाब में तालाब की उत्पादकता बढाने के लिये सुक्ष्म पोषक तत्वों के उपयोग का आंकलन	5	5
6.	मिश्रित मछली पालन में जलीय वनस्पतियों के जैविक नियंत्रण के लिये ग्रास कार्प मछली का प्रदर्शन	5	5
7.	मिश्रित मछली पालन का प्रदर्शन	5	5
8.	चने में Soil Health card के आधार पर आंकलन	4	4
9.	चने में वेस्ट डिकम्पोजर के प्रयोग का आंकलन	5	5

10.	चने में एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन का प्रदर्शन	5	10
11.	कृषक प्रक्षेत्र में कस्टम हायरिंग केन्द्र के प्रभाव का आंकलन	5	5
12.	कृषक प्रक्षेत्र में चने की फसल अंतर्गत विभिन्नद हस्त चलित खरपतवार नियंत्रण उपकरण का आंकलन	5	3
13.	गेहूँ फसल कटाई के लिये स्वनोदित लम्बवत कन्वेयर रिपर यंत्र का कृषक प्रक्षेत्र पर प्रदर्शन	10	6
14.	बैंगन की फसल में प्ररोह बेधक कीट के लिये आई. पी. एम. तकनीक के प्रयोग का आंकलन	6	6
15.	चना की फसल में फली बेधक कीट के लिये आई. पी. एम. तकनीक का प्रदर्शन	10	10

आगामी तीन माह(जनवरी– मार्च) की प्रास्तावित प्रशिक्षण कार्यक्रम

क.	विषय	संख्या	अवधि	प्रशिक्षाणार्थी
1.	फसल उत्पादन	5	5	150
2.	उद्यानिकी	4	4	120
3.	पौध संरक्षण	4	4	120
4.	कृषि अभियांत्रिकी	5	5	150
5.	मृदा स्वास्थ्य	4	4	120
6.	मत्स्यीकी	5	5	150

आगामी तीन माह प्रस्तावित विस्तार गतिविधियां

क.	विषय	संख्या	लाभवन्ति
1.	प्रक्षेत्र दिवस	3	300
2.	फिल्ड सीडी शो	6	350
3.	कृषक संगोष्ठी	2	200
4.	वैज्ञानिकों का कृषक खेतों पर भ्रमण	90	350
5.	प्रदर्शनीय	1	500
6.	लोकप्रिय साहित्य	1	मास

सामयिक सलाह

अक्टूबर 2020

- रबी फसलों के लिए खेत की तैयारी करें। इस हेतु टैक्टर चलित रोटावेटर अथवा कल्टीवेटर का प्रयोग कर खाली खेतो में उथली जुताई करें।

नवंबर 2020

- रबी मौसम में बोयी जाने वाली दलहनी व तिलहनी फसलों की 15 नवम्बर के आसपास बुवाई कर लेने से कीट व्याधियों का प्रकोप न्यूनतम होता है।

दिसंबर 2020

- धान की फसल की कटाई के पश्चात् मृदा में नमी की उपलब्धता के अनुसार गेहूं की बुवाई करें।

केन्द्र में पदस्थ अधिकारी एवं वैज्ञानिकों का संपर्क नंबर		
नाम	पदनाम एवं विशेषज्ञता	मोबाईल नंबर
डॉ. जी.पी. आयम	वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख मृदा विज्ञान एवं कृषि रसायन	9406356172
श्री तोषण ठाकुर	वि.व.वि., मत्स्कीय	9826687395
डॉ. एकता ताम्रकार	वि.व.वि., कीट विज्ञान	9993442554
इंजी जितेन्द्र जोशी	वि.व.वि., फार्म मशीनरी एवं पावर इंजी.	7805039366
डॉ. चेतना बंजारे	वि.व.वि., उद्यानिकी	8962765997
डॉ. वेधिका साहू	वि.व.वि., मृदा विज्ञान एवं कृषि रसायन	8319397676
डॉ. प्रज्ञा पाण्डेय	वि.व.वि., सस्य विज्ञान	7987758329
डॉ. हेमन्त साहू	प्रक्षेत्र प्रबंधक, अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन	9039261949

प्रेषक :
वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख
कृषि विज्ञान केन्द्र, बेमेतरा
जिला – बेमेतरा (छ.ग.) पिन नं. – 491335

प्रति,
श्री/श्रीमती/डॉ. ____________________
____
____